Vijayvargia (Vaishya) Samaj, Mumbai

विजयवर्गीय (वैश्य) समाज, मुंबई

स्वामीजी 1008 श्रीरामचरणजी महाराज द्वारा की जाने वाली परमेश्वर की आरती

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम
राम													राम
राम	**आरती रमता राम तुम्हारी राम राम तुमसे लागी सूरत हमारी**												राम
राम	रमता राम सकल भरपूरा						सूक्षम स्थूल तुम्हारा नूरा						राम
राम	आरती सुमरण सेवा कीजे						सब निर्दोष ग्यान गह लीजे						राम
राम	ये ही आरती ये ही पूजा						राम बिना दर्शे नही दूजा						राम
राम	शिव सनकादिक शेष पुकारे						यह आरती भव सागर तारे						राम
राम	रामचरण ऐसी आरती ताके						अष्टसिध्दि नवनिध्दि चेरी जाके						राम
राम	**आरती रमता राम तुम्हारी राम राम तुमसे लागी सूरत हमारी**												राम
राम	आरती अलख अमर अविनाशी						पूरण बृहम सकल सुखराशी						राम
राम	रमता राम सुरति के स्वामी						अलह अमुरत अर्न्तयामी						राम
राम	सुरति मुरति आदि न अन्ता						सबसे निरवृत सब वर्तन्ता						राम
राम	चवदह तीन लोक पतिशाही						सप्त द्विप नव खण्ड दुहाई						राम
राम	बार बार कहुँ थाह न आवे						सुमरि सुमरि जन माँही समावे						राम
राम	ऐसा साहिब स्वामी मेरा						रामचरण चरणो का चेरा						राम
राम	**आरती रमता राम तुम्हारी राम राम तुमसे लागी सूरत हमारी**												राम
राम	आरती अचल पुरूष अविनाशी						घट घट व्यापिक सकल प्रकाशी						राम
राम	प्रथम आरती मन्दिर बुहारया						राम राम रट कर्म निवारया						राम
राम	दूसरी आरती दीपक जोया						हरदय प्रेम चांदणा होया						राम
राम	तीसरी आरती कुंम्भ भराया						नाभिकमल से गगन चढ़ाया						राम
राम	चौथी आरती चोक बिराजे						जहाँ अनहद का बाजा बाजे						राम
राम	पाँचवी आरती पूरण कामा						सुरति परशिया केवळ रामा						राम
राम	सेवक स्वामी भया समाना						राम ही राम और नाहीं आना						राम
राम	रामचरण ऐसी आरती कीजे						परस अमर वर जुग जुग जीजै						राम
राम	**आरती रमता राम तुम्हारी राम राम तुमसे लागी सूरत हमारी**												राम
राम													राम
राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	श्राम	राम	राम	राम	राम

स्वामीजी 1008 श्रीरामचरणजी महाराज द्वारा की जानेवाली परमेश्वर की आरती

आप हो गुरूदेव दिनपति, अगम ज्ञान प्रकाश हे, उर नयन के तुमदेव वायक, अज्ञतातिम नाश हे।।1 ।।
यथा निज पद पाइयो हम, आप किरपा पूरी हे, नमोजी रिछपाल. सद्गुरू, काल कंटक दूर हे ।।2 ।।
संग सतगुरू देवजी को महाभागी पाय हे, भरम करम अरू श्रम संशय, शोक सारो जाय हे ।।3 ।।
शुध्द आत्म अमल पेखे, पाय निश्चय नाम को, अंहकृत अज्ञान भाग्यो, रंग लाग्यो राम को ।।4 ।।
गुरू नित गुणकार, प्रगट दीन के दयाल हे, श्रीरामचरण चित चरण लिन्हो, कियो मोही निहाल हे ।।5 ।।

राम राम राम राम राम